• कविताएं...

आई चिड़िया आले आई

आई चिड़िया आले आई,
आई चिड़िया बाल आई!
चूं-चूं करती चिड़िया आई,
दाब चोंच में दाना लाई।
दाना आया, पानी आया,
माटी ने मिल बीज उगाया।
धरती में जड़ लगी फैलने,
ऊपरफैल गई बिरवाई।
चिड़िया कहती दाना मेरा,
मुन्ना कहता ना-ना मेरा।
बादल कहता सींचा मैंने,
तीनों में छिड़ गई लड़ाई।
पौधा बोला, तुम सब आओ,
मिल-जुलकर मुझको अपनाओ।
सबसे पहले धरती माँ है,
जिसने मेरी जड़ें जमाई!

■ बंधुरत्न

अनोखी बन्दूक

एक बन्दूक बनाऊं ऐसा
निकले जिससे प्रेम की गोली
जिसको लगे वही फिर बोले
एक-दूजे से मीठी बोली
फिर न होगी कहीं लड़ाई
सभी करेंगे सबकी भलाई
हम बच्चों संग खेलेंगे सब
गुल्ली-डण्डा, छुपन-छुपाई ।

■ आलोक कुमार मिश्रा

• चुटकुले...

पति– सुनो मुझे अलादीन का चिराग मिला है।
पत्नी– वाह आपने उससे क्या मांगा?
पति– मैंने कहा कि वह तुम्हारे दिमाग को 10 गुना और बढ़ा दे।
पत्नी– तो क्या उसने ऐसा कर दिया?
पति– वह हंसने लगा और बोला शून्य को किसी से भी गुणा कर दो वह शून्य ही रहता है। अलादीन और पति दोनों गायब हैं...

आजकल लोग बेहद स्वार्थी हो गए हैं पेन मांगो तो ढक्कन अपने पास रखते हैं...मेरे पास 18 पेन हैं बिना ढक्कन वाले !!

मास्टर – सबसे पवित्र वस्तु क्या है...?
पप्पू – सर मोबाइल...
मास्टर (गुस्से में) – वो कैसे?
पप्पू – वह बाथरूम, अस्पताल, श्मशान से होकर आने के बाद भी बिना धोये हुए घर, रसोई और मंदिर सब जगह जा सकता है!

• जानकारी...

क्लाउड सीडिंग

राजधानी दिल्ली और एनसीआर के क्षेत्र में प्रदूषण का स्तर दिवाली के बाद से बहुत ज्यादा खराब हो जाता है। उस दौरान वहां पर बारिश भी न के बराबर होती है, या फिर होती ही नहीं है। ऐसे में प्रदूषण से निपटना एक बड़ी चुनौती है। इसीलिए दिल्ली में कृत्रिम वर्षा के जरिए प्रदूषण से निपटने के लिए पहली बार क्लाउड सीडिंग का परीक्षण किया जाएगा। दिल्ली सरकार मानसून खत्म होने के बाद क्लाउड सीडिंग यानि कि कृत्रिम बारिश का ट्रायल कराएगी। पहले इसको 4 से 11 जुलाई के बीच कराया जाना था, लेकिन फिलहाल इसको टाल दिया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य वायु प्रदूषण में कमी लाना है। दुनिया के कई देश जैसे कि अमेरिका, चीन और संयुक्त अरब अमीरात भी इसका इस्तेमाल कर रहे हैं।

क्लाउड सीडिंग एक ऐसी तकनीक होती है, जिसका इस्तेमाल सिल्वर आयोडाइड को वायुमंडल में छोड़कर मौसम को बदलने के लिए किया जाता है। इसके जरिए बर्फ के क्रिस्टल बनते हैं और आसमान में बादलों में बारिश करने की क्षमता बढ़ जाती है। सिल्वर आयोडाइड बादलों में बर्फ के नाभिक के निर्माण में सहायता करता है, ये आर्टिफिशिल रेन के लिए जरूरी होता है।

इस प्रक्रिया में सिल्वर आयोडाइड, पोटेशियम आयोडाइड और ड्राई आइस को हवाई जहाज या फिर हेलीकॉप्टर के जरिए हवा में फैलाया जाता है। यही केमिकल जलवाष्प को आकर्षित करते हैं, इसकी वजह से बारिश के बादल बनने में मदद मिलती है। आमतौर पर अगर इस विधि से बारिश कराई जाती है तो इसके लिए 30 मिनट का वक्त लगता है। क्लाउड सीडिंग भी दो तरह से होती है, पहली हाइग्रोस्कोपिक क्लाउड सीडिंग और दूसरी होती है ग्लेशियोजेनिक क्लाउड सीडिंग

हाइग्रोस्कोपिक मैथड में लिक्विड क्लाउड में बूंदों के विलय को तेज कर दिया जाता है, इससे बड़ी बूंदें बनती है। यही अंत में बारिश का कारण बनती है। इसमें आमतौर पर नमक के कण बादल के आधार पर छोड़े जाते हैं। वहीं दूसरी होती है ग्लेशियोजेनिक क्लाउड सीडिंग, जिसमें सिल्वर आयोडाइड या फिर ड्राई आइस जैसे कि आइस के नाभिक को फैलाकर सुपरकूल्ड बादलों में बर्फ का निर्माण किया जाता है। ये सभी बर्फ के नाभिकीकरण और उसके बाद बारिश को ट्रिगर करती हैं।

दिल्ली में पहले भी क्लाउड सीडिंग की योजनाएं थीं, लेकिन यह सफल नहीं हो सका। इस बार नागर विमानन महानिदेशालय यानि (DGCA) से इसके लिए खास अनुमति ली गई है। इसमें IIT कानपुर के वैज्ञानिकों ने एक फॉर्मुला तैयार किया है, ऐसे में ट्रायल कि दिशा में सबकुछ लगभग ठीक चल रहा है। इस प्रोजेक्ट में करीब 3.21 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है। अगर इसमें सफलता मिल गई तो यह दिल्ली के स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए एक बड़ी उपलब्धि साबित हो सकता है।

• गोनू झा

बात ऐसे बनी

गतांक से आगे...

एक दिन शाम को गोनू झा दरबार से लौट रहे थे तो उन्हें राह में राम खेलौना मिल गया । उन्होंने सोचा कि क्यों न राम खेलौना को बथान के काम में लगा दिया जाए! जब तक विपता स्वस्थ होकर आएगा, तब तक राम खेलौना बथान का काम सँभाल लेगा। विपता के आने पर देखेंगे कि राम खेलौना को कौन सा काम दें । उन्होंने राम खेलौना को रोका, पास बुलाया, उसका कुशल-क्षेम पूछा और जब राम खेलौना ने अपनी बदहाली का रोना रोया तो गोनू झा ने उसे बथान का काम सँभालने के लिए कहा। बदले में दो जून खाना के अलावा कुछ पैसा देने की भी बात हुई।

राम खेलौना जो जीवन भर लहेरा की तरह रहा था, पहली बार जीवन में गम्भीर होकर काम करने की कोशिश में जुट गया। एक तो पंडिताइन का स्वभाव; दूसरा गोनू झा का व्यवहार उसे इतना अच्छा लगने लगा कि उसके काम टालने, अहमक की तरह जीने और दूसरों से माँग-चाँगकर खाने की प्रवृति में आमूल-चूल परिवर्तन हो गया और दो-तीन दिनों में ही उसने बथान का काम सँभाल लिया। गोनू झा निश्चिन्त हुए। पंडिताइन ने संतोष की साँस ली।

विपता का बुखार एक महीने से ज्यादा रहा। उन दिनों व्याधिग्रस्त व्यक्ति को बुखार रहते, भोजन कदापि नहीं दिया जाता था। बुखार उतरने के बाद भी विपता की हालत जर्जर थी। किसी का सहारा लेकर बिस्तर से उठता और कोई सहारा देता तो बिस्तर पर लेट पाता। आठ-दस कदम चलता कि हाँफने लगता। गोनू झा, जब भी समय मिलता, उसे देखने चले जाते। उसके पथ्य की व्यवस्था करते और लौट आते। विपता की हालत ऐसी नहीं थी कि दो-तीन महीने से पहले ठीक हो जाए।

बथान का काम राम खेलौना ने सँभाल लिया था। इसलिए गोनू झा चाहते थे कि विपता पूरी तरह ठीक हो जाए तब ही काम पर लौटे।

उधर राम खेलौना का मन पूरी तरह काम में रम गया था। उसे लगता कि काम ही क्या है? दो घंटे सुबह और दो घंटे शाम मन लगा के काम कर लिया जाए तो पूरे दिन मटरगश्ती की छुट्टी। मटरगश्ती करते हुए जहाँ हरी घास दिख जाए-गढ़ लिया और लौट आए। दिन में भी भर पेट भोजन और रात में भी पेटभर भोजन। खाना कहाँ से आएगा, इसकी कोई चिन्ता नहीं। अब किसी से रोटी माँगने की कल्पना से भी शर्म आती राम खेलौना को। महीने भर में ही गोनू झा और पंडिताइन के साथ रहते हुए राम खेलौना के सोचने का तरीका बदल गया था। उसका स्वाभिमान जाग गया था ।

गोनू झा ने भी देखा कि राम खेलौना पूरी तरह बदल गया है। उन्होंने सोचा कि विपता आ जाए तो उसे बथान के काम में लगा देंगे और राम खेलौना को खेत-खलिहान की जिम्मेदारी सौंप देंगे। लड़का मेहनती है, जल्दी सीख जाएगा खेत-खलिहान का काम भी। विपता अभी बीमारी से उठा है, उसे खेत -पथार का काम देना ठीक नहीं होगा।

जब विपता पूरी तरह स्वस्थ होकर गोनू झा के घर आया तब गोनू झा ने राम खेलौना से खेत का काम सँभालने और बथान का काम विपता को सौंप देने को कहा तो राम खेलौना के पाँव के नीचे से मिट्टी खिसकती महसूस हुई। वह बथान के काम में पूरी तरह निपुण हो गया था। अपना काम पूरे मनोयोग से करता था। पंडिताइन को चाची-चाची कहता था लेकिन माँ की तरह सम्मान देता था। उसे समझ में नहीं आया कि उससे कहाँ भूल हो गई कि गोनू झा उसे बथान के काम से हटाकर खेत-पथार का काम सँभालने को कह रहे हैं। उस समय तो वह चुप रहा मगर दूसरे दिन उसने गोनू झा से कहा कि वह खेत का काम नहीं करेगा।

-जारी

विपता का बुखार एक महीने से ज्यादा रहा। उन दिनों व्याधिग्रस्त व्यक्ति को बुखार रहते, भोजन कदापि नहीं दिया जाता था। बुखार उतरने के बाद भी विपता की हालत जर्जर थी। किसी का सहारा लेकर बिस्तर से उठता और कोई सहारा देता तो बिस्तर पर लेट पाता। आठ-दस कदम चलता कि हाँफने लगता। गोनू झा, जब भी समय मिलता, उसे देखने चले जाते। उसके पथ्य की व्यवस्था करते और लौट आते। विपता की हालत ऐसी नहीं थी कि दो-तीन महीने से पहले ठीक हो जाए...

• रोचक...

हीरा

हीरा काफी रेयर मेटल है। यह धरती की काफी गहराई में मिलता है और यह उच्च तापमान और दबाव में बनता है। इसके अलावा इसकी कटिंग और पॉलिशिंग का काम काफी मुश्किल भरा होता है। कटाई और पॉलिशिंग के बाद इनमें से बहुत कम मात्रा में रत्न–गुणवत्ता वाले हीरे मिलते हैं। इसके चलते बाजार में इनको सीमित मात्रा में रखा जाता है, ताकि इनकी कीमत अधिक बनी रहे। अगर बात करें कि किस देश में हीरे की सबसे पहले खुदाई हुई थी तो वह देश भारत है। सबसे पहले भारत के ही खदानों में हीरे की खुदाई हुई थी। रिपोर्ट्स के अनुसार, साल 1896 तक भारत पूरी दुनिया में एक मात्र हीरे का स्रोत था, जहां से हीरा पूरी दुनिया में जाता था। इन्हीं रिपोर्ट्स में इस बात का जिक्र है कि भारत में 1000 बीसी पूर्व हीरे की खोज हो गई थी।

• ऑक्सीजन...

धरती से अगर ऑक्सीजन सिर्फ कुछ सेकेंड के लिए हट जाए तो धरती पर त्राहिमाम मच जाएगा। बड़ी–बड़ी इमारतें कुछ सेकेंड में ध्वस्त हो जाएंगी, गाड़ियां जहां हैं, वहीं पर रुक जाएंगी। इंसान और जानवर मरने लगेंगे। ठीक इसका उल्टा ऑक्सीजन के बढ़ने के बाद होगा। धरती पर मौजूद जानवरों का आकार कई गुना बढ़ जाएगा। छोटे–छोटे कीड़े भी आपको बड़े बड़े नजर आने लगेंगे। मकड़ी का साइज चूहा और चूहे का साइज खरगोश जितना हो जाएगा।